आधुनिक परिदृश्य में भारतीय प्राच्य ज्ञान सम्पदा

शोध – सारांश

भारतीय प्राच्य ज्ञान संपदा विश्व की प्राचीनतम सांस्कृतिक धरोहरों में अद्वितीय है। प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में निहित ज्ञान जीवन के प्रत्येक पक्ष का सांगोपांग विवेचन करता है। इसमें विज्ञान, कला, दर्शन, चिकित्सा एवं जीवन के प्रत्येक पक्ष का गहन और व्यापक दृष्टिकोण निहित है। यह शोध एक विश्वविद्यालय, एक शोध परियोजना के अंतर्गत माननीय राज्यपाल/कुलाधिपति महोदय के निर्देशों के पालन के क्रम में भारतीय प्राच्य ज्ञान की अद्वितीयता और आधुनिक उपयोगिता को पुनः प्रकाशित करने का प्रयास है। इसका उद्देश्य प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पुर्नस्थापित कर प्राच्य ज्ञान और आधुनिक ज्ञान प्रणाली के मध्य सेतु निर्माण के लिए सर्वथा नवीन एवं उपयोगी मार्गदर्शिका विकसित करना है। इस शोध प्रबंध के निर्माण का कार्य ''आधुनिक परिदृश्य में भारतीय प्राच्य ज्ञान सम्पदा'' विषयक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन से प्रारम्भ हुआ, जिसके माध्यम से प्राप्त विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों के शोध पत्रों ने इस शोध कार्य को एक समृद्ध और बहु–विषयक कृति का रूप प्रदान किया है। समस्त आमंत्रित शोध पत्रों को विशेषज्ञों के द्वारा मूल्यांकित करने के अनंतर श्रेष्ठतम 87 शोध पत्रों का संकलन कर उन्हें एक समग्र शोध प्रबन्ध का रूप दिया गया। इन शोध पत्रों को विषयों के आधार पर सात विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया, जिससे शोध के विभिन्न पक्षों का वृहद प्रस्तुतीकरण किया जा सके ।

खण्ड–1 प्राच्य विज्ञान एवं प्राचीन गणित

शोध प्रबंध के प्रथम खंड के अंतर्गत प्राचीन विज्ञान एवं गणित से संबन्धित शोध पत्रों को वर्गीकृत किया गया है। इसके अन्तर्गत प्राचीन भारतीय भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञानके सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक अनुसंधान एवं प्रयोग, धातु विज्ञान, पारम्परिक कृषि में सिंचाई आदि का विस्तृत एवं गहन अन्वेषण किया गया है। सूक्ष्म जीव विज्ञान एवं जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उपलब्ध प्राचीन ज्ञान तथा पक्षी जगत के प्रति भारतीय ज्ञान परंपरा के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को भी इस खंड में समाहित किया गया है।

यह खंड केवल विज्ञान की विधाओं तक ही सीमित नहीं है अपितु इसके अन्तर्गत प्राचीन भारत में त्रिकोणमितीय फलनों के मान, बौधायन शुल्वसूत्रों में वर्णित वृत्त एवं वर्ग के मध्य संबंध तथा उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों का गहनता पूर्वक विश्लेषण किया गया है। ब्रह्मगुप्त की भावना तथा भास्कराचार्य द्वारा विकसित चक्रवाल पद्धति की भी इस खंड के अन्तर्गत समीक्षा की गयी है, जो वर्तमान में पेल के समीकरण को हल करने में सहायक है। वस्तुतः यह खंड न केवल प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकों तथा गणितज्ञों के अद्वितीय योगदान को उजागर करता है, अपितु उसकी आधुनिक गणित तथा विज्ञान के विकास में महत्व को भी रेखांकित करता है।

खण्ड–2 आयुर्वेद एवं योग

द्वितीय खंड के अंतर्गत आयुर्वेद एवं योग से संबन्धित शोध पत्रों का समावेश किया गया है। इसके अनुभाग में मानव के शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य तथा जीवन शैली से संबन्धित भारत के प्राचीन पारंपरिक ज्ञान का आधुनिक दृष्टि से विश्लेषण किया गया है। आयुर्वेद में वर्णित जीवन शैली, त्रिदोष के गूढ अध्ययन के साथ–साथ प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियाँ, पंचकर्म, कटिवस्ती आदि का आधुनिक समय की शारीरिक समस्याओं जैसे डिस्क हर्निएशन आदि में महत्व से संबन्धित वैज्ञानिक अनुसन्धानों पर भी इस खंड में गहनता से प्रकाश डाला गया है।

खण्ड–3 इतिहास, संस्कृति एवं राजनीतिक विचार

ग्रंथ के तृतीय अनुभाग का वर्ण्य विषय अत्यंत विस्तृत है। यह खंड, जहां एक ओर भारत के इतिहास लेखन में औपनिवेशिक प्रभाव को दर्शाता है, वहीं दूसरी ओर प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में विदेश नीति, सैन्य व्यवस्था, राष्ट्रीय चेतना, राजा के प्रमुख धर्म, लोकतान्त्रिक मूल्यों का भारतीय समाज में अस्तित्व, कल्याणकारी राज्य की अवधारणा आदि राजनैतिक विषयों पर विचारों की मुखर अभिव्यक्ति करता है। इसके अतिरिक्त भारतीय संस्कृति तथा प्राचीन भारतीय चित्रकला, वास्तुकला, स्थापत्यकला से संबन्धित शोध कार्यों का समावेश भी इस भाग के अंतर्गत किया गया है।

खण्ड–4 अर्थशास्त्र एवं प्रबंधन

यह खंड प्राचीन भारतीय ग्रन्थों यथा वेद, उपनिषद, गीता, रामायण आदि में वर्णित प्रबंधन के सिद्धांतों के वर्तमान समय में महत्व को विश्लेषित करता है कि किस प्रकार इन प्राचीन सिद्धांतों को अपना कर व्यक्ति तथा संस्था अपने कार्यबल का पूर्णरूपेण उपयोग कर सकती है। इसके अतिरिक्त यह भाग कौटिलीय अर्थशास्त्र का आलोचनात्मक विश्लेषण भी प्रस्तुत करता है।

खण्ड–5 दर्शन एवं शैक्षिक चिंतन

शोध ग्रंथ का यह भाग भारतीय दर्शन शास्त्र के विविध सिद्धांतों तथा उनके मानव जीवन पर प्रभाव को अपना वर्ण्य विषय बनाता है। गीता रामायण जैसे ग्रन्थों में वर्णित दार्शनिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान किस प्रकार वर्तमान में प्रासांगिक है तथा उसे किस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत संस्कृत शिक्षा के माध्यम से प्रभावी रूप से पाठ्यक्रम में समाविष्ट किया जा सकता है, यह इस भाग का प्रमुख प्रतिपाद्य है।

खण्ड–6 पर्यावरण

इस खंड के अंतर्गत वैदिक परंपरा में पर्यावरण संरक्षण, भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण आदि के संबंध में चर्चा की गयी है। साथ ही भारतीय संस्कृति में परंपरागत रूप से विद्यमान इस पर्यावरणीय चेतना की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का भी विस्तृत विश्लेषण किया गया है कि किस प्रकार उनका प्रयोग करके एक सामंजस्यपूर्ण और स्थिर भविष्य की दिशा में कदम बढ़ाया जा सकता है।

खण्ड–7 विविध/बहुविषयक

शोध ग्रंथ के सातवें तथा अंतिम खंड में विविध विषयों से संबन्धित अत्यंत रोचक तथा ज्ञानवर्धक शोधकार्यों का समावेश किया गया है। इसके अंतर्गत जहां एक ओर भारत की समृद्ध भाषिक धरोहर की चर्चा की गई है, वहीं दूसरी ओर भरत मुनि के नाट्यशास्त्र के रस सिद्धांत का भारतीय सिनेमामें प्रभाव और उनकी चित्रण शैली पर विचार किया गया है। इसके अतिरिक्त भारतीय संगीत परंपरा, रागमाला, कौटिल्य के दृष्टिकोण से विवाह में न्याय तथा कानून, उत्तराखंड में भिमल वृक्ष के उपयोग, कृषि के क्षेत्र में घाघ के ज्ञान की प्रासंगिकता, पारंपरिक ज्ञान को समकालीन शैक्षिक ढांचे में समाहित करने की आवश्यकता आदि अनेक विषयों का समावेश कर इसे भारतीय ज्ञान परंपरा से संबन्धित एक समग्र शोध ग्रंथ बनाने का प्रयास किया गया है।

निष्कर्ष

भारतीय प्राचीन ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों–जैसे विज्ञान, गणित, आयुर्वेद, योग, खगोलशास्त्र और राजनीति के योगदान न केवल भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं, बल्कि इनकी वैश्विक प्रासंगिकता भी प्रमाणित हो चुकी है। इस शोध ने इन ज्ञान शाखाओं को आधुनिक संदर्भ में पुर्नपरिभाषित करने और उनके व्यावहारिक उपयोग की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल की है। इस समृद्ध ज्ञान को संरक्षित करना और इसे वैश्विक विकास, सांस्कृतिक सशक्तीकरण एवं वैज्ञानिक अनुसंधान में उपयोग करना अत्यंत आवश्यक है। यह कार्य भारतीय प्राचीन ज्ञान को विश्वभर में एक अमूल्य धरोहर के रूप में स्थापित करता है, जिसके भविष्य में शोध और अनुप्रयोग से व्यापक लाभ की संभावना है।